अव्यक्त मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:04-01-15

हम पदमा-पदम भाग्यशाली बच्चों को सदा अपना हाथ और साथ देने वाले बापदादा ने कहा, सिर्फ एक बात याद रखो - सर्व सम्बन्धों से हर कार्य में बापदादा सदा साथ है.

हम भाग्यशाली आत्माओं का कितना श्रेष्ठ भाग्य है कि हमें सर्वोच्च आत्मा - शिवबाबा (ऊंचे ते ऊंच आत्मा) और सर्व-श्रेष्ठ आत्मा - ब्रहमाबाबा (सर्व-जीवात्माओं में सर्व-श्रेष्ठ) ऐसे बाप और दादा का सदा साथ है. दो बड़े इंजिन अभी हमें अपने पुरुषार्थ में सम्पूर्ण बनाने में साथ दे रहे हैं. अगर यह स्मृति हमें सदा रहे तो हम स्वतः ही बेफिक्र बादशाह बन जायेंगे. आज की बापदादा की मुरली में बापदादा ने हमें यही स्मृति में रखने को कहा है सदा याद रहे कि "बापदादा सदा मेरे साथ है, बापदादा सदा मेरे पास हैं."

बापदादा ने बच्चों में क्या देखा?

- बापदादा हम बच्चों की वर्तमान स्थिति और भविष्य सम्पूर्ण अवस्था के अन्तर को देख रहे थे. बापदादा कई बच्चों के वर्तमान को देखते हुए हर्षित भी हो रहे थे कि यह सम्पूर्ण अवस्था से बहुत नजदीक है और साथ-साथ कई बच्चों के विचित्र चलन को देख रहम भी आ रहा था कि बाप कितना श्रेष्ठ बनाते है और बच्चे अपनी ही थोड़ी सी गफलत करने के कारण वा अलबेलेपन के कारण श्रेष्ठ स्थिति से नीचे आ जाते हैं.

- बापदादा विशेष रुप से बच्चों के भिन्न-भिन्न प्रकार के हंसी के रुप देख रहे थे - ब्राह्मण जन्म होते ही हर बच्चे को बापदादा इस संगमयुगी विश्व सेवा की जिम्मेदारी का ताजधारी बनाता. लेकिन बापदादा ने आज बच्चों का रमणीक खेल देखा - कोई-कोई बच्चे तो अच्छे ताज और तिलकधारी भी थे लेकिन कई और बच्चे ताजधारी के बदले किए हुए पिछले वा अबके भी छोटे सो बड़े पाप वा चलते-चलते की हुई अवज्ञाओं की गठरी सिर पर थी. कोई ताजधारी तो कोई के सिर पर बोझ की गठरी लिए हुए थे.

- बापदादा ने बच्चों के सिर पर अलग-अलग प्रकार की बोझ की छोटी बड़ी गठरी देखी. हमें अपने में चेक करना है कि हमारे में कौन सी बोझ की गठरी है जो हमें सम्पूर्ण बनने में विघ्न रुप बनती है और उसे बापदादा को सोप देना ही है.

१. कोई के सिर पर डबल लाइट के बजाय, अपने ब्राह्मण जीवन के सदा ट्रस्टी स्वरूप के बजाय गृहस्थी-पन के भिन्न-भिन्न प्रकार के बोझ की टोकरी भी सिर पर थी. (ग्रहस्थ आश्रम में रहने वाले ब्राह्मण बच्चे अपने में चेक करें कि हमारे में तो बापदादा ने कोई टोकरी तो नहीं देखी!!)

२. कई बच्चे अनेक प्रकार के सहज साधन बाप द्वारा प्राप्त होते हुए भी निरंतर बुद्धि का कनेक्शन जुटा हुआ न होने के कारण सहज को मुश्किल बनाने के कारण, अनेक प्रकार के मुश्किल साधन अपनाने में थके हुए रुप में दिखाई दे रहे थे. सहज मार्ग के बजाय पुरुषार्थ के साधन, हठ के प्रमाण यूज कर रहे थे. (कई बच्चे लाइट या म्यूजिक के बिना योग नहीं करते है - यह भी एक हठ हैं.)

३. कई बच्चे सूर्य के आगे बादल आने से सूर्य छिप जाता है ऐसे बार-बार माया के बादलों के कारण कई बच्चे ज्ञान सूर्य के किनारे हो सूर्य को पाने के लिए प्रयत्न करते रहते. कब सन्मुख कब किनारे, इसी खेल में लगे हुए हैं. साथ-साथ बच्चे नटखट होने के कारण बाप के याद की गोदी से निकल माया की धूल में देह-अभिमान की स्मृति रुपी मिट्टी में खेलते हैं. बाप बार-बार मिट्टी से किनारा कराते लेकिन नटखट संस्कारों के कारण फिर भी मैले बन जाते. (बापदादा के लक्की सितारे जिन्हें सम्पूर्ण बनाने में बापदादा स्वयं भी बहुत पुरुषार्थ करते है - शायद उनका पार्ट ही ऐसा है!!)

४. कोई-कोई बच्चे अल्पकाल के सुखों के आकर्षण-मय वस्तुओं की आकर्षण में आकर उन्हीं वस्तुओं में इतने बिजी हो जाते जो समय और अविनाशी प्राप्ति उतना समय भूल जाती हैं. फिर होश में आते हैं - ऐसे अनेक प्रकार के विचित्र रुप बच्चों के देखे. (बापदादा के यंग बच्चे जो सेल फोन, कार या अन्य वस्तुओं के आकर्षण में आते है)

- अब आगे क्या करना है?

बापदादा ने कहा, बापदादा तो हर बच्चों को सदा श्रेष्ठ स्वरूप में देखना चाहते है.

बच्चों को आगे के लिए पुरुषार्थ के लिए बापदादा ने यह ज्ञान के पॉइन्ट्स उच्चारण किये -

१. बचपन के, अपबेलेपन के व नटखट के खेल बहुत समय खेले अब तो वानप्रस्थ में जाने का समय समीप आ रहा है इसलिए अब इन सब बातों की समाप्ति का द्रढ़ संकल्प करो - सदा ताज (विश्व सेवा का ताज), तख्त (बापदादा का दिलतख्त) और तिलकधारी (स्वमान की स्मृति) बनो. तिलक होगा तो ताज तख्त जरूर होगा.

२. अपने श्रेष्ठ भाग्य, श्रेष्ठ प्राप्तियों को बार-बार सामने लाओ - जब सर्व प्राप्तियों को और प्राप्त कराने वाले को सदा सामने रखेंगे तो कभी भी माया से सामना करने में कमजोर नहीं बनेंगे.

३. सिर्फ एक बात याद रखो - सर्व सम्बन्धों से हर कार्य में बापदादा सदा साथ है. साथ छोडने के कारण ही यह विचित्र खेल खेलने पड़ते हैं. सदा स्मृति में रहे कि सारे विश्व की जिम्मेवारी उठाने वाला बाप का साथ है. उसको सब बोझ देकर हलके हो जाओ.

४. स्वयं को ज्ञानी तू आत्मा कहलाते हो - ज्ञान स्वरूप अर्थात कहना, सोचना और करना समान हो, सदा समर्थ हो. ज्ञानी तू आत्मा का हर कर्म समर्थ बाप समान, संस्कार गुण और कर्तव्य समर्थ बाप के समान हो. सदा मिलन के खेल में बिजी रहते, बाप से मिलन मनाना और औरों को बाप समान बनाना.

ॐ शांति.

Feedbacks/Queries/Suggestions to Atma Bhai on email
a.brahmin.soul@gmail.com.